International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 14-09-2020; Accepted: 28-09-2020; Published: 15-10-2020
www.hindijournal.com
Volume 6; Issue 5; 2020; Page No. 101-103

'मगध-महिमा' के इतिहास-बोध का महत्व

आराधना साव

शोधार्थी, हिन्दी विभाग, प्रेसीडेंसी विश्वविद्यालय, कोलकाता, पश्चिम बंगाल, भारत

सारांश

इतिहास केवल अतीत का ज्ञान नहीं होता है और न ही हमारी गलतियों का केवल एक आईना, बल्कि इतिहास किसी देश या किसी व्यक्ति के सम्पूर्ण व्यक्तित्व और अस्तित्व के आकलन का एक महत्वपूर्ण आधार होता है। इसी आधार पर खड़े होकर एक देश या व्यक्ति अपने भविष्य की ओर आगे बढ़ता है। यह आधार अगर गौरवमयी है तो वह गौरवबोध के साथ स्वर्णिम भविष्य का स्वप्न देखता है और उसी पथ पर आगे बढ़ता है लेकिन यही आधार अगर निराशाजनक हो तो वह धीरे-धीरे हीनताबोध में जकड़ता चला जाता है और एक स्वर्णिम भविष्य के निर्माण करने की उसकी क्षमता क्षीण होती जाती है। इसलिए 'मगध-महिमा' द्वारा दिनकर जी ने मगध के गौरवमयी इतिहास को स्मरण किया है। निसंदेह उनका मकसद केवल मगध के इतिहास का गुणगान करना नहीं रहा होगा बल्कि पाठकों को कर्मपथ पर प्रेरित करना भी रहा होगा, इस शोध पत्र में मैंने इसी बात की पड़ताल की है और 'मगध-महिमा' के इतिहास-बोध के महत्व को समझने का प्रयास किया है।

मूल शब्द: इतिहास, समाज, स्वतन्त्रता, गौतम बुद्ध, गौरवशाली, चन्द्रगुप्त मौर्य, अशोक

प्रस्तावना

किसी मनुष्य, समाज, राष्ट्र या फिर देश की वर्तमान स्थिति का आकलन करने के लिए किसी न किसी आधार की आवश्यकता अवश्य होती है। उस देश या समाज या फिर मनुष्य की वर्तमान स्थिति ह्रासशील है या विकासशील, यह जानने के लिए उसके इतिहास का ज्ञान होना आवश्यक है। वह इतिहास ही है जो किसी भी देश, समाज या मनुष्य की वर्तमान स्थिति के आकलन का आधार होता है। मनुष्य का इतिहास केवल बीती हुई कथा नहीं है बल्कि वह बोध है जो मनुष्य को उसकी असली पहचान से रूबरू करवाती है। और यही पहचान ब्रिटिशकालिन भारतीय जनमानस विस्मृत कर चुका था। अपने गौरवशाली इतिहास को विस्मृत कर गुलामी की जंजीरों में जकड़ा भारतीय जनमानस में केवल हीनताबोध शेष रह गया था। आलोचक शम्भूनाथ ने अपनी पुस्तक ' दिनकर : कुछ पुनर्विचार ' में लिखा है, " बिना इतिहास की चेतना के कोई भी अपने को पराधीन महसूस नहीं कर सकता। स्वाधीनता का बोध इतिहास की प्रक्रिया है, वर्तमान की उपज नहीं। इतिहास के संकटों के मध्य मानवीय स्थितियों के संघर्ष से स्वतन्त्रता की चेतना का विकास होता है कहाँ वह स्वतंत्र है और कहाँ नहीं। अतः स्वतंत्रता एक विकासशील बोध है जो इतिहास से बनता है। ''1 लेकिन लगातार विदेशियों के शासन का दंश झेलते-झेलते भारतीय अपनी गौरवशाली इतिहास विस्मृत कर चुके थे। फिर लॉर्ड मैकाले जब अपनी शिक्षा नीति लेकर आया, तब उसमें उसने पूरी की पूरी भारतीय शिक्षा,भारतीय ज्ञान, भारतीय साहित्य एवं शास्त्रों को ही नकार दिया। उसकी नीति भारतीयों को केवल शारीरिक रूप से ही नहीं अपितु मानसिक रूप से भी ग़ुलाम बनाने की रही जिसमे वह सफल रहा। उसने कहा था, " We must do our best to form a class who may be interpreters between us and the millions whom we govern ; a class of persons Indian in blood and colour, but English in taste, in opinions, words, and intellect '' .2 कहना न होगा कि उनके द्वारा तैयार की गयी इसी भारतीय जमात ने उन्हें भारत पर शासन करने में वर्षों मदद की। मगर इस मानसिक गुलामी को तोड़ने का प्रयास उस समय के भारतीय विद्वानों, समाज सुधारकों एवं साहित्यकारों ने किया। उस समय के भारतीय साहित्यकारों ने अपनी रचनाओं द्वारा भारत के गौरवशाली इतिहास को भारतीय जनता के सामने रखने का प्रयास किया। रामधारी सिंह ' दिनकर ' भी ऐसे ही साहित्यकारों में शामिल हैं और उनकी पद्ध – नाटिका 'मगध-महिमा' ऐसी रचनाओं में। हालांकि 'मगध-महिमा' आजादी के बाद प्रकाशित होती है मगर इसका उद्देश्य भारतीय जनता को उसके गौरवशाली इतिहास का स्मरण कराकर उसे एक गौरवशाली भविष्य निर्माण के पथ पर चलने के लिए प्रेरित करना ही था।

'मगध-महिमा' दिनकर जी की ' इतिहास के आँसू ' नामक काव्य-संकलन में संकलित है जो 1951 में प्रकाशित हुई। इस पद्ध-नाटिका में पात्र के रूप में 'कल्पना' और 'इतिहास' है। 'इतिहास' को एक पात्र के रूप में प्रस्तुत करना अपने आप में एक नवीन प्रयोग है जहाँ इतिहास स्वयं अपनी गाथा सुनाता है। आलोचक शम्भूनाथ ने लिखा है, " कवि जब यथार्थ के बदलने का अनुभव करता है, तो वह यथार्थों की किसी पूरी धारा के विकास के संदर्भ में ही इस बदलाव की वास्तविक पहचान कर सकता है। उसका खोजी और संघर्षशील मन नए अनुभव, विचार और सत्य कमाता है। जब वह समाज के यथार्थों की सामाजिक धारा के ऐतिहासिक विकास को पकड़ लेता है अथवा यह पकड़ विकसित करता जाता है, तो इतिहास भी उस रचनाकार अथवा कवि को अपनी रचनाशील अभिव्यक्ति का माध्यम बना लेता है। "3 वस्तुतः 'मगध-महिमा' में भी इतिहास स्वयं को दिनकर जी की कलम से अभिव्यक्त करता है। इस अभिव्यक्ति में इतिहास गौतम बुद्ध द्वारा सुजाता के हाथों खीर खाने, चन्द्रगुप्त मौर्य द्वारा विश्व-विजेता सिकंदर के सेनापति सेल्यूकस को पराजित करने एवं सम्राट अशोक का कलिंग युद्ध के पश्चात हृदय-परिवर्तन के प्रसंग को चुनता है और मगध की उस धरती की महिमा-गान करता है जिससे ये तीनों प्रसंग जुड़ा है। " यह तो हुआ इतिहास

लेकिन इतिहास तो महज अतीत का ज्ञान है। वास्तविक चीज़ तो है विवेक जो इतिहास-बोध से आता है और बढ सकता है। इसके लिए जरूरी है कि हम इतिहास की जानकारी को समझदारी से इस्तेमाल करें। तभी इतिहास से पैदा हुआ इतिहास-बोध इतिहास निर्माण के काम आ सकता है।" 4

दिनकर जी का सम्पूर्ण काव्य 'मनुष्य अपने भाग्य का निर्माता है' को ही जैसे चरितार्थ करता प्रतीत होता है। इस बात की पुष्टि वह इतिहास के भारत-भाग्य निर्माताओं को अपने काव्य का अंश बनाकर करते हैं। वे इतिहास को काव्य में ध्वनित करते हुए वर्तमान के फलक पर अतीत को संभाव्य बनाने की विराट चेष्टा करते हैं। उन्होने लिखा भी है –

" प्रियदर्शन इतिहास कंठ में
आज ध्वनित हो मान्य बने,
वर्तमान की चित्रपटी पर
भूतकाल संभाव्य बने। '' 5

'मगध-महिमा' पद्ध-नाटिका की शुरुआत मगध के खंडहरों के भग्न प्राचीरों को जिज्ञासा से देखती हुई कल्पना के गीत से होती है जिसमें वह उन खंडहरों, उनके एक-एक ईंट, उनके इतिहास आदि के संबंध में प्रश्न कर रही होती है। तब उसका उत्तर देते हुए इतिहास स्वयं उन खंडहरों की गौरव-गाथा सुनाता है। वह कहता है-

" यह खंडहर उनका, जिनका जग
कभी शिष्य औ' दास बना था;
यह खंडहर उनका, जिनसे
भारत भू- का इतिहास बना था। '' 6

यह इतिहास उसी भारत-भूमि के मगध की है जो अब जर्जर एवं भग्न अवस्था में था। वही मगध जिसके गर्भ में गौतम बुद्ध, चन्द्रगुप्त मौर्य एवं अशोक जैसे महान विभूतियों का इतिहास छिपा है। वही मगध जहाँ गौतम बुद्ध अपनी वर्षों की कड़ी तपस्या के पश्चात उरुवेला प्रदेश की सेनानी ग्राम की सुजाता नामक एक स्त्री के हाथ का खीर खाये थे। दरअसल, " संबोधी-प्राप्ति के पूर्व बुद्धों का किसी न किसी महिला के हाथों खीर का ग्रहण करना कोई अनोखी घटना नहीं थी। उदाहरणार्थ, विपस्सी बुद्ध ने सुदस्सन-सेट्ठी पुत्री से, सिखी बुद्ध ने पियदस्सी-सेट्ठी पुत्री से, वेस्सयू बुद्ध ने सीखिद्ध्ना से, ककुसंघ बुद्ध ने वजिरिन्धा से, कोमागमन बुद्ध ने अग्गिसोमा से, कस्सप बुद्ध ने अपनी पत्नी सुनन्दा से तथा गौतम बुद्ध ने सुजाता से खीर ग्रहण किया था। '' 7 जिस वृक्ष के नीचे गौतम बुद्ध ने खीर ग्रहण किया उसी वृक्ष के नीचे एक बार सुजाता ने यह प्रतिज्ञा की थी कि अगर उसे पुत्र-रत्न की प्राप्ति होती है तो वह इस वृक्ष के देव को खीर अर्पण करेगी। जब उसकी आकांक्षा पूरी होती है तो वह अपनी पूर्णा नामक दासी को उस वृक्ष के नीचे की ज़मीन साफ करने भेजती है ताकि वह वृक्ष-देव को खीर अर्पण कर सके। जब पूर्णा वहाँ पहुँचती है तब वह गौतम बुद्ध को वहाँ देखती है। वह उन्हें ही वृक्ष देवता समझ लेती है और सुजाता को जाकर खबर देती है। सुजाता अति प्रसन्न होकर आती है और गौतम बुद्ध को खीर खिलाती है। गौतम बुद्ध अपना 49 दिनों का उपवास सुजाता के हाथों खीर खाकर तोड़ते हैं। गौतम बुद्ध से जुड़े इसी प्रसंग का उल्लेख कवि दिनकर ने 'मगध-महिमा' में किया है कि किस तरह गौतम बुद्ध उरुवेला के सुंदर दृश्य में रमकर तपस्या में लीन हो गए और जब तपस्या में लीन उनका शरीर कृशकाय हो गया तब भोली सुजाता ने उन्हें वृक्ष-देव समझ खीर खिलाई और बोली –

भरी गोद मेरी यह जसे,
पूर्णकाम तुम भी हो वैसे,
मिला मुझे ज्यों तोष देव ! त्यों मिले तुम्हें उपराम।
हमारे पूरे ज्यों मन-काम। '' 8

सुजाता के मुख से ऐसी वाणी सुन भगवान बुद्ध अत्यंत प्रसन्न हुए। दिनकर जी ने उपर्युक्त काव्य पंक्तियों के बाद लिखा है, " (सुजाता की यह शुभैषणा पूर्णरूप से चरितार्थ हुई, क्योंकि उसी की खीर खाने के बाद बोधि वृक्ष के नीचे गौतम ने वह गहरी समाधि लगाई जिसमें उन्हें बुद्धत्व प्राप्त हुआ। कहते हैं, सुजाता के मुख से यह आशीर्वाद सुनकर भगवान अत्यंत प्रसन्न हुए और उन्होने कहा कि जब तक तुम-सी भोली नारी मौजूद है, तब तक मुझे भी सफलता की आशा है।)" 9

'मगध-महिमा' में दूसरा प्रसंग चन्द्रगुप्त मौर्य और सेल्यूकस का है। सेल्यूकस युद्ध में चंद्रगुप्त से पराजित हो चुका है और अब चन्द्रगुप्त के दरबार में सेल्यूकस की सजा पर चर्चा हो रही है। चन्द्रगुप्त की दरबार की यह चर्चा भारतवर्ष की प्राचीन से वर्तमान तक की नीति को समेटती है। भारतवर्ष ने कभी किसी को अपना ग़ुलाम बनाकर रखना नहीं चाहा और शत्रुओं को हमेशा क्षमादान देता रहा है। मगध-महिमा में चंद्रगुप्त मौर्य कहता है –

" मगध नहीं चाहता किसी को अपना दास बनाना !
गुरु कहते हैं, दासभाव आर्यों के लिए नहीं है ;
मैं कहता हूँ, मनुजमात्र ही गौरव का कामी है।
मैं न चाहता, हरण करे हम किसी देश का गौरव,
किसी जाति को जीत उसे फिर अपना दास बनाएँ। ''10

आचार्य चाणक्य ने अखंड भारत का स्वप्न अवश्य देखा था लेकिन इतिहास गवाह है कि भारत ने कभी साम्राज्यवादी नीति से किसी देश पर कभी हमला नहीं किया, कभी किसी देश को अपना उपनिवेश बनाना नहीं चाहा और न कभी बनाया। लेकिन स्वयं भी किसी का ग़ुलाम बनकर रहना मंजूर नहीं किया और 200 साल तक जड़े जमाई सत्ता को भी उखाड़ फेका और अपने को ग़ुलामी की जंजीरों से मुक्त किया। दिनकर जी ने लिखा है –

" नहीं चाहते किसी देश को हम निज दास बनाना,
पर, स्वदेश का एक मनुज भी दास न कहीं रहेगा। '' 11

पूरी दुनिया को जीतने निकला यूनान के विजय-रथ को भारत के वीर ने रोका। यूनान भारत के सामने नतमस्तक था। भारत के इतिहास के इन गौरवशाली पन्नों को दिनकर जी निम्नलिखित शब्दों में सामने रखते हैं –

" सामने नहीं, मंच पर आज
खड़ा है विजयी भारत वीर,
और है मिट्टी पर यूनान,
पराजय की पहने जंजीर।
XXX - XXX - XXX - XXX - XXX
आज पराजित है, सचमुच ही, भारत में यूनान। '' 12

भारत की वैश्विक नीति एवं सिद्धान्त ' वसुधैव कुटुंबकम ' की रही है। युद्ध की अपेक्षा शांति को प्राथमिकता देता आया है भारत। शीत युद्ध के समय भी भारत ने गुट-निरपेक्षता का सिद्धान्त अपनाया था। दिनकर जी के

साहित्य में भी ' युद्ध की विभीषिका और उसके दुष्परिणाम ' विषय रहा है। 'मगध-महिमा' में भी तीसरा प्रसंग अशोक के कलिंग युद्ध के पश्चात अशोक के हृदय-परिवर्तन से जुड़ा है। कलिंग युद्ध में हुए नरसंहार को देखकर विजयी सम्राट अशोक क्षोभ से भरा युद्ध के परिणाम पर विचार कर रहा है। वह स्वयं से प्रश्न कर रहा है –

" यह बहा किसका लहू ? किसका हुआ अवसान ?
कौन थे, जिनको न जीने का रहा अधिकार ?
कौन मैं, जिसने मचाया यह विकट संहार ?" 13

मनुष्य के अस्तित्व को समाप्त करने का अधिकार किसी को नहीं है,किसी सम्राट को भी नहीं। ' कौन मैं ' लिखकर दिनकर विजयी अशोक को कटघरे में खड़ा करते हैं। जीवन प्रकृति का दिया हुआ है और जीने का अधिकार भी। फिर कौन था वो जिसने युद्ध में मारे गए लोगों से उसके जीने का अधिकार छीन लिया। अशोक पश्चाताप के इसी आग में जलकर बौद्ध धर्म का महान प्रचारक बना और पूरे विश्व में शांति का दूत बना। यथा –

" गूँजे धर्म का जयगान।
शांति-सेवा में लगे समवेत तन, मन, प्राण।
व्यर्थ प्रभुता का अजय मद, व्यर्थ तन की जीत,
सार केवल मानवों से मानवों की प्रीत।
XXX - XXX - XXX - XXX - XXX
दया की हुई जयश्री चेरी।
सकल विश्व में नृप अशोक की बजी धर्म की भेरी। '' 14

मनुष्य का इतिहास-बोध उसे उसके अतीत से तो परिचय कराता ही है,साथ ही वर्तमान को वह मजबूत आधार भी देता है जिस पर खड़े होकर वह एक मजबूत भविष्य की ओर बढ सके। " इतिहास-बोध का मतलब होता है देश-काल के अनुसार उपयुक्त सबक लेना जो कहीं से किसी की सकारात्मकता तथा नकारात्मकता या दोनों से लिया जा सकता है। " 15 दिनकर जी का उद्देश्य भी यही रहा कि हम अपने इतिहास के महान विभूतियों से सबक ले और आगे का स्वर्ण इतिहास हम लिखे लेकिन केवल अपने या अपनों तक सीमित होकर नहीं बल्कि पूरे विश्व को लेकर चले। हम दो किनारों के बीच बहने वाली नदी की तरह नहीं बल्कि विशाल सागर बने। यथा –

" चंद्रगुप्त-चाणक्य समर्थक-रक्षक रहे स्वजन के,
हीन बंध को तोड़ हो गए पर, अशोक त्रिभुवन के।
दो कुलों के बीच सिमटकर सरिताएं बहती हैं,
सागर कहते उसे, दिखता जिसका नहीं किनारा।
कल्पने ! यह संदेश हमारा। " 16

अतः हिन्दी साहित्य में इतिहास को आधार बनाकर साहित्य रचने की एक लंबी परंपरा रही है, निसंदेह 'मगध-महिमा' उसी परंपरा में आती है। ये सच है कि इतिहास को न तो बदला जा सकता है और न मिटाया जा सकता है मगर विरासत के रूप में जो इतिहास हमें मिलता है उसके ज्ञान के समुचित प्रयोग से हम अपना भविष्य अवश्य संवार सकते हैं। यही प्रयास हिन्दी-साहित्यकारों ने इतिहास का प्रयोग अपनी रचनाओं में करके किया है। 'मगध-महिमा' भी ऐसी ही प्रयासों में शामिल है। 'मगध-महिमा' के इतिहास-बोध का महत्व तो इस रूप में भी आँकी जा सकती है कि इसकी प्रासंगिकता आज भी बनी हुई है। वर्तमान मगध यानि बिहार की गिनती देश के सबसे गरीब राज्यों में किया जाता है। वही बिहार जो एक समय पूरे भारत पर राज किया था। वर्तमान मगधवासी दूसरे राज्यों में अपने नाम के आगे 'बिहारी' टैग से अपमानित महसूस करते हैं। इसका बहुत बड़ा कारण उनमें अपने इतिहास के प्रति जागरूकता और इतिहास-बोध की कमी भी है जिसे 'मगध-महिमा' जैसी रचना काफी हद तक दूर कर सकती है। और भारत को विश्व-पटल पर गौतम बुद्ध,चन्द्रगुप्त मौर्य एवं सम्राट अशोक जैसे विभूतियों की भूमि होने के कारण गर्व करने का अवसर प्रदान करता है।

संदर्भ सूची

1. शम्भूनाथ, ' दिनकर : कुछ पुनर्विचार ', जनचेतना प्रकाशन, प्र०सं० 1976, पृ०- 63।
2. Macaulay TB. In support of his Education policy as presented in to the then Governor- General William bentick, 1835.
3. शम्भूनाथ, ' दिनकर: कुछ पुनर्विचार, जनचेतना प्रकाशन, प्र०सं० 1976, पृ०- 116-117।
4. वर्मा लाल बहादुर, ' सोवियत क्रांति और चंपारण सत्याग्रह ', अनहद (पत्रिका),अंक -8 जून 2018,सं- संतोष कुमार चतुर्वेदी, पृ० – 101।
5. दिनकर' रामधारी सिंह, चक्रवाल(भूमिका से), 1956,पृ०- ग।
6. 'दिनकर' रामधारी सिंह, 'मगध-महिमा', इतिहास के आँसू' श्री अजंता प्रेस लिमिटेड, दू०सं० – 1955, पृ० – 14।
7. https ://m.bharatdiscovery.org/india/सुजाता।
8. 'दिनकर' रामधारी सिंह, 'मगध-महिमा', इतिहास के आँसू' श्री अजंता प्रेस लिमिटेड, दू०सं० – 1955, पृ० – 10।
9. वही, पृ० – 10।
10. वही, पृ० – 17।
11. वही, पृ० – 18।
12. वही, पृ० – 20-21।
13. वही, पृ० – 25।
14. वही, पृ० – 26-27।
15. वर्मा लाल बहादुर, ' सोवियत क्रांति और चंपारण सत्याग्रह ', अनहद (पत्रिका),अंक -8 जून 2018,सं- संतोष कुमार चतुर्वेदी, पृ० – 105।
16. दिनकर' रामधारी सिंह, 'मगध-महिमा', इतिहास के आँसू' श्री अजंता प्रेस लिमिटेड, दू०सं० – 1955, पृ० – 28।